# UPSC MAIN EXAM
# हिंदी साहित्य : वैकल्पिक विषय
## डॉ. अजय अनुराग

- संघ लोक सेवा आयोग तीन चरणों में आयोजित की जाने वाली सिविल सेवा परीक्षा का दूसरा और सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण 'मुख्य परीक्षा' है। चूंकि यह परीक्षा कुल **1750** अंकों की होती है, अतः इसका प्राप्तांक ही अभ्यर्थियों की अंतिम सफलता का आधार बनता है। इसलिए इस परीक्षा की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। किन्तु इस परीक्षा की तैयारी शुरू करते समय जो एक बड़ी कठिनाई सामने आती है, वह है- वैकल्पिक विषय का चयन।
- प्रायः ऐसा देखा गया है कि अभ्यर्थी वैकल्पिक विषय के चयन मे अपने तर्क और विवेक से निर्णय न लेकर किसी दोस्त अथवा अपने सीनियर की सलाह मान लेते हैं और किसी ऐसे विषय का चयन कर लेते हैं जो उनकी अभिरूचि के बिल्कुल अनुकूल नहीं होता। नतीजा यह होता है कि पढ़ने में अरूचि होने के कारण एक-दो साल की तैयारी के बाद अभ्यर्थी अपना विषय बदल देते हैं। इससे श्रम एवं समय दोनों की बर्बादी होती है। अतः बेहतर होगा कि परीक्षा की तैयारी शुरू करने से पहले वैकल्पिक विषय का चयन बहुत सावधानीपूर्वक किया जाए।
- बहरहाल, **UPSC** परीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों के बीच जो वैकल्पिक विषय सर्वाधिक लोकप्रिय रहे हैं उनमें- हिन्दी साहित्य, इतिहास, भूगोल, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र व राजनीति विज्ञान आदि प्रमुख हैं।
- इन विषयों में जहाँ तक 'हिन्दी साहित्य' का सवाल है तो इसे लेकर एक रोचक तथ्य यह है कि हिन्दी साहित्य एक सरल, सहज व अंकदायी विषय है। वस्तुतः हिन्दी साहित्य ही नहीं बल्कि सभी भाषाओं के साहित्य का पेपर इस परीक्षा में अंकदायी है। यह न केवल मानविकी के छात्रों में बल्कि विज्ञान एवं वाणिज्य की पृष्ठभूमि वाले छात्रों के लिए भी उतना ही सहज एवं लोकप्रिय बना रहा है।

## हिन्दी साहित्य का चयन क्यों?

- हिन्दी के पाठ्यक्रम से हमारा परिचय काफी पुराना है, क्योंकि हम सभी दसवीं एवं बारहवीं कक्षा तक प्रायः अनिवार्य विषय के रूप में हिन्दी का अध्ययन करते हैं। कई कवियों और रचनाकारों को, जैसे- कबीर, सूरदास, तुलसीदास, निराला, पंत, प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, भारतेन्दु, प्रेमचंद आदि को हम पहले से जानते हैं।
- हिन्दी में कुछ टॉपिक ऐसे हैं जहां से प्रश्न आने ही हैं और उसकी सौ फीसदी गारंटी दी जा सकती है।

- हिन्दी के दोनों प्रश्नपत्र परस्पर जुड़े हुए हैं। मसलन, प्रथम पत्र में हिन्दी साहित्य के इतिहास के अंतर्गत जिन विधाओं का उद्भव एवं विकास दिखाया गया है, द्वितीय पत्र में उन्हीं विधाओं की कुछ प्रतिनिधि रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन करना है।
- इसमें अन्य विषयों की तरह कोई सैद्धान्तिक अथवा पारिभाषिक शब्दावली नहीं है।
- यह हिन्दी और अंग्रेजी दोनों माध्यम के अभ्यर्थियों के लिए समान रूप से सरल, सहज और सुगम है।
- हिन्दी साहित्य रखने के लिए किसी पृष्ठभूमि की जरूरत नहीं, बल्कि गैर-हिन्दी पृष्ठभूमि के अभ्यर्थियों ने इसमें और अच्छा प्रदर्शन किया है। हिन्दी लेकर सफल होने वाले अधिकांश अभ्यर्थियों की पृष्ठभूमि साहित्य की नहीं होती।
- हिन्दी में अन्य विषयों की तरह कोई सैद्धान्तिक अथवा पारिभाषिक शब्दावली नहीं है जिसे रटना पड़े या फिर शब्दकोश देखने की जरूरत पड़े।

## हिन्दी साहित्य: कुछ भ्रांतियाँ और सच

एक वैकल्पिक विषय के रूप में हिन्दी साहित्य को लेकर कुछ भ्रांतियाँ भी प्रचलित हैं। मसलन-

- ***हिन्दी पढ़ने के लिए हिन्दी की पृष्ठभूमि होनी चाहिए।***
- ***इसमें कविता की ढेर सारी पंक्तियां रटनी होगी।***
- ***उत्तर-लेखन के लिए आलंकारिक व साहित्यिक शब्दों का प्रयोग आवश्यक है।***

- उल्लेखनीय है कि ये भ्रांतियाँ हिन्दी के पाठ्यक्रम को ठीक से न जानने के कारण हैं। हिन्दी पढ़ने के लिए किसी पृष्ठभूमि की जरूरत नहीं, बल्कि गैर-हिन्दी अभ्यर्थियों ने इसमें अच्छा प्रदर्शन किया है। यहां कविता की पंक्तियों को रटना नहीं बल्कि समझना है ताकि आप उसकी व्याख्या कर सकें।
- यहां प्रश्नोत्तर लिखते हुए हमें कवि-लेखकों की तरह स्वतंत्र व मौलिक लेखन नहीं करना होता वरन् पाठ्यक्रम में दी गई रचनाओं का उनके समकालीन व समसामयिक परिप्रेक्ष्य में केवल मूल्यांकन करना होता है। अतः यहाँ अधिक रचनात्मक होने की कोई गुंजाईश नहीं होती। उत्तर की भाषा भी सरल, सहज और अधिक संप्रेषणीय होनी चाहिए।

## हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम-विश्लेषण

**पेपर- I**

**खंड –क : हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का इतिहास।**

**खंड - ख: हिन्दी साहित्य का इतिहास।**

***(इस पेपर के दोनों खंडों में 4-4 प्रश्न मिलाकर कुल 8 प्रश्न होंगे जिनमें से 5 प्रश्नों (प्रश्न सं-01 और 05 अनिवार्य) के उत्तर देने हैं।)***

**पेपर- I**

**खंड –क : काव्य भाग**

**खंड – ख : कथा साहित्य**

***इस पेपर के दोनों खंडों में 4-4 प्रश्न मिलाकर कुल 8 प्रश्न होंगे जिनमें से 5 प्रश्नों (प्रश्न सं-01 और 05 अनिवार्य) के उत्तर देने हैं।***

## हिन्दी साहित्य: कैसे करें तैयारी?

- प्रायः यह पूछा जाता है कि हिन्दी साहित्य की तैयारी कैसे की जानी चाहिए और इसमें अधिकाधिक अंक प्राप्त करने की तकनीक क्या हो सकती है? इस संबंध में यह कहा जा सकता है कि साहित्य में जीवन की विविध अनुभूतियों और संवेदनाओं को ही व्यक्त किया जाता है, अतः उसे समझने के लिए हमें वस्तुनिष्ठ होने के बजाए थोड़ी व्यावहारिक समझ का उपयोग करना चाहिए। वस्तुतः साहित्य की कोई भी विधा या प्रकार- कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि हो, उसके मूलतः दो ही पक्ष होते हैं-

  1. ***रचना में क्या कहा गया है? अर्थात् रचना का भावपक्ष या कथ्य।***
  2. ***रचना में व्यक्त भाव को कैसे कहा गया है? अर्थात् रचना का शिल्प या कलापक्ष।***

- साहित्य में इन दोंनों पक्षों को भाव सौंदर्य व शिल्प सौंदर्य के नाम से भी जाना जाता है। इस दृष्टिकोण से हिन्दी साहित्य के पाठ्यक्रम पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए जो सबसे आवश्यक शर्त है, वह है- किसी भी साहित्यिक रचना को पढ़ने के क्रम में आप उसके भावपक्ष व कलापक्ष को ठीक तरह से समझें।
- यहाँ भाव पक्ष के अन्तर्गत यह देखना चाहिए कि रचनाकार ने अपनी रचना में जिस विषय को उठाया है, वह कितना नवीन व मौलिक है। उस विषय का हमारे समय व समाज से कितना सरोकार है। क्या इस विषय को

पहले भी किसी कवि-रचनाकार ने उठाया है और यदि ऐसा है तो तुलनात्मक रूप से इस रचना की विशिष्टताओं को रेखांकित किया जाना चाहिए।

- इसी तरह, कला पक्ष के अन्तर्गत भाषा-शैली, वर्णन-शैली, काव्यरूप, गुण-दोष, रस, छंद, अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, कल्पना, फैंटेसी आदि शिल्प-तत्वों के आधार पर रचना की बुनावट की पड़ताल की जाती है। अतः इसके लिए शिल्प-तत्वों को अच्छी समझ होनी चाहिए ताकि उस आधार पर रचना का मूल्यांकन किया जा सके।
- हिन्दी साहित्य में तुलनात्मक व प्रामाणिक उत्तर-लेखन की मांग अपेक्षित होती है। चूंकि, साहित्य हमारे जीवनानुभवों की ही पुनर्रचना है, अतः वह किसी भी काल या दौर का हो, उसमें कुछ बातें समान होती है। किन्तु दूसरी ओर, समय और समाज की बदलती परिस्थितियों, अभिरूचियों व प्रवृतियों से साहित्य का स्वरूप व स्वाद भी बदलता है। इसलिए इन बदलावों के परिप्रेक्ष्य में भी तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। मसलन- आजकल साहित्य में भूमंडलीकरण, उत्तर-आधुनिकतावाद, दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श, सभ्यताओं की टकराहट, इतिहास का अंत आदि जैसे नए विचारों की अनुगूँज स्पष्ट सुनी जा सकती है।
- प्रामाणिक उत्तर से आशय यह है कि आप जो भी लिखें उसके प्रमाण या पृष्टि के लिए रचना की पंक्तियां अथवा रचनाकार-आलोचकों के विचारों को भी यथासंभव उल्लिखित करते चलें। इससे आपके उत्तर को ठोस आधार मिलता है और उससे संतुष्ट होकर परीक्षक भी ठोस अंक देते हैं।
- इसी तरह किसी रचना की प्रासंगिकता पर भी हमारी नजर होनी चाहिए। आखिरकार हिन्दी साहित्य हमारे लिए क्यों उपयोगी है? अपने उत्तर में हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि अमुक रचना आज के समय व समाज के लिए उतनी ही प्रासंगिक है जितना तत्कालीन समय में थी। वस्तुतः किसी रचना की प्रासंगिकता ही उसे कालजयी कृति का दर्जा प्रदान करती है।
- इसके अतिरिक्त, यदि निम्नलिखित बातों का भी ध्यान रखा जाए तो हिन्दी साहित्य में आसानी से अच्छे अंक प्राप्त किए जा सकते हैं-

1. भाषा खंड का स्वरूप चूंकि तथ्यात्मक है और इसमें अंक भी अधिक मिलते है, अतः इसके अध्ययन हेतु पहले समझ विकसित करें फिर इसके बाद याद करने का अभ्यास करें।

2. साहित्य के इतिहास से टिप्पणी वाले प्रश्न को तैयार करने के लिए विभिन्न टॉपिक के छोटे-छोटे हिस्सों, अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण साहित्यिक विधाओं तथा पाठ्यक्रम में दिए गए सभी कवि-लेखकों के परिचय को तैयार कर लेना चाहिए।

3. द्वितीय पत्र में शामिल रचनाओं को पहले परीक्षा के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि रूचि लेकर पढ़ें। फिर उन रचनाओं पर एक-एक मानक आलोचना की पुस्तक पढ़ें। ध्यान रहे कि द्वितीय पत्र में अच्छे अंक

तभी प्राप्त किए जा सकते हैं जब आप रचनाओं के मूल कथ्य से भली-भाँति परिचित हों। इसका लाभ व्याख्या वाले प्रश्नों में मिल जाता है।

4. किसी भी साहित्यक कृति को पढ़ने से पूर्व उसकी भूमिका या रचनाकार के व्यक्तव्य को भी ध्यान से अवश्य पढ़ें। इससे उस रचना व रचनाकार की पृष्ठभूमि व परिस्थितियों को समझने में आसानी होगी। रचना की भूमिका प्रश्न की प्रकृति को समझने में भी सहायक होती है।

5. हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़ने के क्रम में ही दूसरे पत्र में शामिल कवियों और लेखकों की रचनाओं का मोटेतौर पर अध्ययन कर लेना चाहिए। मसलन, भक्तिकाल के अध्ययन क्रम में ही कबीर, सूरदास, तुलसी, जायसी की रचना-प्रविधि को समझें। इसी तरह रीतिकाल में बिहारी तथा भारतेन्दु काल को पढ़ते हुए 'भारत-दुर्दशा' की पृष्ठभूमि को समझा जा सकता है।

6. द्वितीय पत्र में व्याख्या के अंतर्गत विभिन्न काव्यांशों तथा गद्यांशों की व्याख्या करते हुए क्रमबद्धता का ध्यान रखें। जैसे-संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या, भाव-सौंदर्य (भाव या विचार, नवीनता या मौलिकता, वस्तु-वैशिष्ट्य, संदेश आदि) तथा शिल्पगत सौंदर्य (भाषा, शैली, शब्द शक्ति, अलंकार, छंद, बिंब, प्रतीक, आदि) की चर्चा। ध्यान रखें कि व्याख्या करते हुए शीर्षक देने के बजाए विभिन्न परिच्छेदों में इनकी चर्चा करें।

7. कविता के प्रश्न को लिखते हुए उदाहरण के तौर पर कविता के अंशों को उत्तर में अवश्य शामिल करें, किन्तु इनकी अधिकता नहीं होनी चाहिए।

8. कथा साहित्य वाले प्रश्नों में भी यथासंभव गद्यांशों को शामिल करने का प्रयास करें, किन्तु याद न आने की स्थिति में उसके आशय को भी रखा जा सकता है।
9. व्याख्या की अच्छी तैयारी हेतु सभी कवियों से संबंधित कुछ व्याख्या-प्रारूप (मॉडल) पहले से ही तैयार करके अभ्यास करते रहें।

10. पाठ्यक्रम से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण पंक्तियों और उद्धरणों को एक अलग जगह नोट करके रख लें और उन्हें याद करने का अभ्यास करें।

## उत्तर-लेखन संबंधी रणनीति

उत्तर लेखन के क्रम में निम्नांकित बातों का ध्यान रखें-

- उत्तर संक्षिप्त एवं सटीक हो, इसके लिए शब्द-सीमा का ध्यान रखें।
- प्रश्न की प्रकृति तथा उसके संकेत शब्दों, जैसे- विवेचन, विश्लेषण, मूल्यांकन, समीक्षा, आलोचनात्मक मूल्यांकन, विचार कीजिए, स्पष्ट कीजिए आदि को ठीक से समझकर ही उत्तर को प्रारंभ करें। इन संकेत शब्दों के विशिष्ट अर्थ हैं जिन्हें समझे बिना उत्तर का दिशा-निर्धारण करना कठिन है।
- भाषा सरल एवं सहज होनी चाहिए, किन्तु अस्तरीय नहीं।
- वर्तनी की अशुद्धियों से बचने हेतु सरल शब्दों का प्रयोग करें।
- उपयुक्त एवं सार्थक शब्दों का प्रयोग करते हुए छोटे-छोटे वाक्यों में अपनी बात रखें। किन्तु वाक्य में निरंतरता एवं प्रवाह बनी रहनी चाहिए।
- प्रश्न की मांग के अनुरूप उत्तर लिखें न कि अपने अध्ययन और तैयारी के अनुरूप।
- उत्तर लिखते हुए अपनी रचनात्मकता का नहीं बल्कि अपनी संपादन-कला का परिचय दें।

## कक्षा की विशेषताएँ

- प्रतिदिन लगभग 2. 30 घंटे की क्लास जिसमें आप शिक्षक से सीधा संवाद कर सकते हैं।
- सप्ताह में **5** दिनों की नियमित कक्षाएं और प्रत्येक शनिवार टेस्ट का आयोजन।
- क्लास में पाठ्यक्रम के प्रति आपकी समझ विकसित करने पर विशेष बल।
- सर्वाधिक अंकदायी भाग- भाषा एवं व्याख्या खंड पर विशेष अभ्यास-सत्र।
- प्रत्येक टॉपिक का अध्यापन प्रारूप-निर्माण-विधि द्वारा किया जाना।
- नियमित उत्तर-लेखन अभ्यास व मूल्यांकन तथा विगत वर्षों के प्रश्नों पर विस्तृत चर्चा।
- मुख्य परीक्षा से पूर्व 'परीक्षा अभ्यास-सत्र' व मॉडल उत्तर की व्यवस्था।
- अध्ययन हेतु उत्कृष्ट व परिमार्जित अध्ययन सामग्री।

## संस्थान द्वारा उपलब्ध अध्ययन सामग्री

बुकलेट-**1 :** रणनीति एवं प्रश्नपत्र विश्लेषण

बुकलेट-**2 :** हिन्दी भाषा एवं लिपि

बुकलेट-**3 :** कविता का इतिहास

बुकलेट-**4 :** गद्य का इतिहास

बुकलेट-**5 :** हिन्दी काव्य

बुकलेट-**6 :** हिन्दी गद्य

बुकलेट-**7 :** हिन्दी काव्य (व्याख्या)

बुकलेट-४ : हिन्दी गद्य (व्याख्या)

**(इसके अतिरिक्त विभिन्न टॉपिक्स पर कुछ अन्य अध्ययन सामग्री)**

## प्रस्तावित पुस्तकों की सूची

**प्रथमपत्र-I**

1. **साहित्यशास्त्र-परिचय** : NCERT
2. **हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास :डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी**
3. **हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र**
4. **हिन्दी साहित्य का इतिहास** IGNOU **की पुस्तिकाएँ**
5. **आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ : डॉ. नामवर सिंह**
6. **हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : डॉ. रामस्वरूप चर्तुवेदी**
7. **हिन्दी भाषा : डॉ. हरदेव बाहरी**

**प्रथमपत्र-II**

1. **कबीर : डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी**
2. **सूरदास की काव्य चेतना :डॉ. बलराम तिवारी**
3. **तुलसीदास : प्रो. वासुदेव सिंह**
4. **जायसी ग्रंथावली (भूमिका) : आचार्य रामचंद्र शुक्ल**
5. **बिहारी-रत्नाकार : डॉ. बलराम तिवारी**
6. **कामायनी (मूल्यांकन एवं पुनर्मूल्यांकन) : इन्द्रनाथ मदान**
7. **निराला-आत्महन्ता आस्था : दूधनाथ सिंह**
8. **तीन कवि : तीन कविताएँ : नंद किशोर नवल**
9. **असाध्यवीणा और अज्ञेय : रमेशचंद्र शाह**
10. **मुक्तिबोध : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी**
11. **नागार्जुन और उनकी कविता : अजय तिवारी**
12. **भारत दुर्दशा : गिरीश रस्तोगी**

13. स्कन्दगुप्त : सिद्ध नाथ कुमार
14. आषाढ़ का एक दिन : गिरीश रस्तोगी
15. गोदान : डॉ. गोपाल राय
16. मैला आँचल: डॉ. गोपाल राय
17. दिव्या : डा. गोपाल राय
18. महाभोज : डॉ. गोपाल राय

# UPSC

## हिंदी साहित्य : पाठ्यक्रम

### प्रश्नपत्र-1 (खंड : 'क')

### हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का इतिहास

- अपभ्रंश, अवहट्ट और प्रारंभिक हिन्दी का व्याकरणिक तथा अनुप्रयुक्त स्वरूप।
- सिद्ध एवं नाथ साहित्य, खुसरो, संत साहित्य, रहीम आदि कवियों और दक्खिनी हिन्दी में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप।
- मध्यकाल में ब्रज और अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास।
- उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली और नागरी लिपि का विकास।
- हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का मानकीकरण।
- स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी का विकास।
- भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास।
- हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक और तकनीकी विकास। हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ और उनका परस्पर संबंध।
- नागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ और उसके सुधार के प्रयास तथा मानक हिन्दी का स्वरूप। मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना।

### प्रश्नपत्र-1 (खंड : ख)

### हिन्दी साहित्य का इतिहास

- हिन्दी साहित्य की प्रासंगिकता और महत्त्व तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परम्परा। हिन्दी साहित्य के इतिहास के निम्नलिखित चार कालों की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

आदिकाल:

- सिद्ध, नाथ और रासो साहित्य।
- प्रमुख कवि: चंदबरदाई, खुसरो, हेमचन्द्र, विद्यापति।

भक्ति काल:

- संत काव्य धारा, सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्तिधारा और राम भक्तिधारा।
- प्रमुख कवि : कबीर, जायसी, सूर और तुलसी।
- रीतिकाल: रीतिकाव्य, रीतिबद्ध काव्य, रीतिमुक्त काव्य
- प्रमुख कवि : केशव, बिहारी, पदमाकर और घनानंद।

आधुनिक काल:

- नवजागरण, गद्य का विकास, भारतेन्दु मंडल
- प्रमुख लेखक : भारतेन्दु, बाल कृष्ण भट्ट और प्रताप नारायण मिश्र।
- आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ। छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत, समकालीन कविता और जनवादी कविता।
- प्रमुख कवि : मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर', सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव मुक्तिबोध, नागार्जुन।

कथा साहित्य:

- उपन्यास और यथार्थवाद
- हिन्दी उपन्यासों का उद्भव और विकास
- प्रमुख उपन्यासकार : प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, रेणु और भीष्म साहनी।
- हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास।
- प्रमुख कहानीकार : प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', मोहन राकेश और कृष्णा सोबती।

नाटक और रंगमंच :

- हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास
- प्रमुख नाटककार : भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद, जगदीश चंद्र माथुर, रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश।
- हिन्दी रंगमंच का विकास।

आलोचना :

- हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास- सैद्धांतिक, व्यावहारिक, प्रगतिवादी, मनोविश्लेषणवादी आलोचना और नई समीक्षा।
- प्रमुख आलोचक - रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा और नगेन्द्र। हिन्दी गद्य की अन्य विधाएँ: ललित निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त।

## पद्य खंड

- कबीर : कबीर ग्रंथावली (आरंभिक 100 पद) सं. श्याम सुन्दर दास
- सूरदास : भ्रमरगीत सार (आरंभिक 100 पद) सं. रामचंद्र शुक्ल
- तुलसीदास : रामचरित मानस (सुंदर काण्ड), कवितावली (उत्तर काण्ड)
- जायसी : पदमावत (सिंहलद्वीप खंड और नागमती वियोग खंड) सं. श्याम सुन्दर दास
- बिहारी : बिहारी रत्नाकर (आरंभिक 100 दोहे) सं. जगन्नाथ दास रत्नाकर
- मैथिलीशरण गुप्त : भारत भारती
- जयशंकर प्रसाद : कामायनी (चिंता और श्रद्धा सर्ग)
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : राग-विराग (राम की शक्ति पूजा और कुकुरमुत्ता) सं. रामविलास शर्मा
- रामधारी सिंह 'दिनकर' : कुरुक्षेत्र
- अज्ञेय : आंगन के पार द्वार (असाध्यवीणा)
- मुक्तिबोध : ब्रह्मराक्षस नागार्जुन : बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, हरिजन गाथा।

## प्रश्नपत्र-2 (खंड : ख)

## गद्य साहित्य

- भारतेन्दु : भारत दुर्दशा
- प्रसाद : स्कंदगुप्त
- मोहन राकेश : आषाढ़ का एक दिन
- प्रेमचंद : गोदान, 'प्रेमचंद' की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (संपादक : अमृत राय)
- यशपाल : दिव्या
- फणीश्वरनाथ रेणु : मैला आंचल
- मन्नू भण्डारी : महाभोज
- रामचंद्र शुक्ल : चिंतामणि (भाग-1), (कविता क्या है, श्रद्धा-भक्ति)।
- निबंध निलय : संपादक : डॉ. सत्येन्द्र। बाल कृष्ण भट्ट, प्रेमचन्द, गुलाब राय, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, अज्ञेय, कुबेरनाथ राय।
- राजेन्द्र यादव (सं.) : एक दुनिया समानान्तर (सभी कहानियाँ)

---